दीपावली की रात्रि में ही भौतिक समृद्धि के प्रयोग का विशेष महत्व क्यों ?

दीपावली की रात्रि को कालरात्रि माना गया है। इस रात्रि को महानिशा भी कहा गया है। पौराणिक संदर्भ में कालरात्रि को अत्यंत अशुभ माना गया है। अब प्रश्न उठता है कि ऐसी अशुभ रात्रि में लक्ष्मीपूजन जैसा शुभ कार्य कैसे संभव है। इस कालरात्रि का अर्थ क्या है? और इसका मानना क्या है?

महा और निशा दो शब्दों से बना है एक शब्द महानिशा। महा का अर्थ है बड़ा, बहुत महत्वपूर्ण और निशा का सरल अर्थ है रात्रि। वह रात्रि जो हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होती है अथवा महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि देने वाली होती है उस रात्रि को महानिशा अर्थात् कालरात्रि कहा गया है।

आदिकाल से पुराणों में शक्ति पूजा के लिए वर्ष के विभिन्न दिनों को मान्यता दी गयी है। शास्त्रों एवं पुराणों में कार्तिक मास की अमावस्या को कालरात्रि के नाम से संबोधित किया गया है। अमावस्या के दो दिन पूर्व से दो दिन बाद तक अर्थात् पाँच दिनों तक का समय पुण्य काल माना गया है। इसलिए कार्त्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को धनतेरस, चतुर्दशी को नरक चौदस, अमावस्या को दीपावली, लक्ष्मी पूजन तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को अन्नकूट एवं द्वितीया को भैयादूज के रूप में पंचमहापर्व के रूप में मनाया जाता है। यह समय शरद ऋतु काल का सुखमय एवं पावन समय रहता है। इसलिए इस ऋतु की उपासना के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता रहा है और आज भी उसी मान्यता के अनुसार यह पंचमहापर्व मनाए जाते हैं।

दीपावली की रात्रि कालरात्रि है, यह बात तो स्पष्ट हो गयी। लेकिन पूरी रात्रि ही कालरात्रि नहीं है। पूरी रात्रि को दो भागों में विभक्त किया जाएगा। रात्रि का पहला भाग अर्थात अर्द्धरात्रि तक लक्ष्मी, गणेश, पंचदेवों की उपासना की जाएगी। इसलिए सिद्ध रात्रि या श्री रात्रि कही जाती है। अर्द्धरात्रि के बाद से लेकर सूर्योदय से दो घड़ी पूर्व तक (रात्रि 12 बजे से लेकर प्रातः 5 बजे तक) महानिशा कहा जाता है।

जो साधक महानिशा में साधना करना चाहे उन्हें चाहिए कि रात्रि के 11 बजे तक साधना की संपूर्ण तैयारी कर ले।

महानिशा में तंत्र की साधना करने का विशेष महत्व है। इसी समय लक्ष्मीजी की आराधना करने से अक्षय धन–धान्य की प्राप्ति होती है। यह समय लक्ष्मी प्राप्ति की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। कहा गया है– **''अर्द्धरात्राात् परंयच्च मुहूर्त्तज्ञयमेव च। सा महारात्रि रुटिटष्टा तऊतं चाक्षयं भवेत्।।**

अर्थात् दीपावली की रात्रि को आधी रात के पश्चात् जो दो मुहूर्त का समय है उसे महानिशा कहते हैं। उसमें आराधना करने से अक्षय लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

दीपावली की ही रात्रि में आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, चेटक, मारण तक के प्रयोग किए जाते हैं। यह प्रयोग मात्र एक रात्रि की साधना से ही प्रभावी हो जाती है। महानिशा में किए गए प्रयोग गंभीर असर करते हैं। महानिशा ऐसी रात्रि है, जो वर्ष में एक बार ही आती है। क्या आप ऐसी रात्रि सोते हुए, जुआ खेलते हुए, राग–रंग या मस्ती में गुजार देंगे। इस वर्ष महानिशा में सोए हुए नहीं रहें, बल्कि मनोकामना पूर्ति के लिए संपूर्ण रात्रि साधना करें।

यदि इस रात्रि का कोई व्यक्ति उपयोग नहीं करे और दरिद्रता के लिए, दुर्भाग्य के लिए किस्मत का रोना रोता रहे, तो साक्षात कुबेर भी उसे धनी नहीं कर सकते।

जब कोई व्यक्ति सत्कार्यों की ओर, साधना की ओर, उन्नति की ओर प्रवृत्त होता है तो उसकी राह में कई रोड़े आते हैं, कई व्यक्ति उसकी हँसी उड़ाते हैं, माखौल उड़ाते हैं, अपमान करते हैं, लेकिन यदि आपको कहीं पर पहुँचना है, किसी उद्देश्य को पाना है, तो इन सभी हरकतों को ठोकर मारते हुए, अनदेखा करते हुए बढ़ते चलिए अपनी राह पर। भविष्य निश्चित रूप से आपका होगा और जो आपका आज माखौल उड़ा रहे हैं वे कल पछतायेंगे कि क्यों नहीं उन्होंने भी इन तांत्रिक प्रयोगों का सहारा लिया होता। आयुर्वेद में स्पष्ट रूप से लिखा है कि जिस दवा पर आपको विश्वास नहीं होता, वह कभी कारगर नहीं होती। अतः सर्वप्रथम आपको इन

प्रयोगों पर, मंत्र की शक्ति पर पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा होनी आवश्यक है। यदि आपको हमारे ऋषियों द्वारा प्रदत्त साधना प्रयोगों पर, मंत्रों पर, तंत्र पर विश्वास नहीं है एवं मात्र आजमाने के लिए ही इन प्रयोगों को संपन्न करना चाहते हैं तो हम आपसे यही निवेदन करेंगे कि कृपया अपना समय एवं धन बर्बाद न करें।

आज तंत्र के नाम पर सबसे अधिक ठगी होती है और हम नहीं चाहते कि आपके मुँह से भी ऐसे ही वाक्य निकले। यदि आप किसी डॉक्टर से मात्र अपना मर्ज जानकर चले आएं, तो क्या उससे आपका मर्ज ठीक हो जाएगा। शायद कभी नहीं.....क्योंकि सभी मर्ज की कोई–न–कोई दवा होती है। इसी प्रकार ज्योतिष में भी यदि आपकी जन्मकुण्डली देखकर यह ग्रह नीच का है, यह ग्रह उच्च का है, यह दशा चल रही है, ऐसा योग है आदि–आदि बातें बतलाने से क्या लाभ होगा? यदि आपकी हस्तरेखा देखकर या अन्य किसी विधि से आपकी समस्या का बखान तो कर दें, लेकिन समाधान कुछ भी न बता पाएं तो उस विज्ञान का क्या महत्व ?

इसलिए तंत्र का प्रयोग किया जाने लगा। क्योंकि वर्तमान युग में तंत्र सबसे अधिक प्रभावी है, तत्काल फल देने वाला है। अतः सबसे अधिक तांत्रिक प्रयोग ही प्रचलन में आए। साधनाएं चूंकि अधिक समय तक चलने वाली होती हैं एवं उनके साथ कई नियम पालन करने होते हैं, उनकी विधियाँ भी बहुत परिश्रम वाली होती हैं, तब यह लघु तांत्रिक प्रयोग प्रचलन में आए। यह लघु प्रयोग एक प्रकार से उन साधना विधियों का संक्षिप्त रूप ही हैं। जिस प्रकार शाबर मंत्र अत्यधिक प्रभावशाली है, उसी प्रकार इन प्रयोगों के प्रभाव पर भी कोई शंका नहीं की सकती।

क्योंकि प्रकृति प्रदत्त सभी वस्तुओं में उनके गुण–धर्म मौजूद है। अतः दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी साधनाओं के लिए विशेष रूप से यह तांत्रिक प्रयोग विभिन्न तांत्रिकों से, संन्यासियों से, अघोरियों से इकट्ठे किए गए हैं। हाल ही में विश्व तंत्र ज्योतिष द्वारा मुम्बई में आयोजित शताब्दी ज्योतिष–वास्तु, यंत्र–मंत्र–तंत्र महासम्मेलन के अवसर परभी कई विद्वान तांत्रिकों से प्रत्यक्ष मुलाकात में ऐसे ही प्रयोगों के बारे में गंभीर चर्चा हुई कि किस प्रकार से छोट–से–छोटे एवं कम–से–कम खर्च में शीघ्र फल देने वाले तांत्रिक प्रयोग को आम जनता के सामने लाया जाए, जिससे वे समृद्ध हो सकें, खुशहाल हो सकें, आनंदमय जीवन जी सकें।

यदि चार वेद, 18 पुराण और छः शास्त्र होते हुए भी हम गरीब देश की गिनती में आते हैं, तो हमारा दुभाग्य तो है ही साथ ही इन वेदों का, पुराणों का भी अपमान है।

हमारे ऋषि–महर्षियों ने अत्यधिक परिश्रम कर, बिना किसी प्रलोभन के, बिना किसी सुविधा के इतना परिश्रम कर मात्र जनकल्याण के लिए हमारे लिए जो खजाना सौंपा है और हम उसका उपयोग नहीं कर पा रहे हैं या मात्र उस खजाने की रखवाली ही कर रहे हैं, तो यह नीरी मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।

एक अक्षर में भी कितनी विराट शक्ति छिपी है, यही बतलाता है मंत्र शास्त्र। तंत्र साधना का प्रचलन यंत्र साधना के बाद ही हुआ। यंत्रों की रचना चित्रात्मकता तथा रेखागणित के आधार पर की गयी। यंत्रों को सरल बनाने के लिए ही तंत्र का उदय हुआ। ऐसी मान्यता विद्वतजनों की है। अधिकांश तंत्र प्रयोगों में देखा जाय तो भगवान शंकर एवं पार्वती का संवाद ही है। संवाद–संवाद में ही पूरी साधना विधि बतलाई गयी है।

हमारा प्रयास है कि इस महापर्व पर आपकी मनोकामनाएँ पूर्ण हों, आप समस्त सुखों को प्राप्त करते हुए आनंदमय जीवन जीयें। जब तक जीयें निरोग रहें एवं प्रसन्न रहें। अगर आपके पास कोई सामग्री पहले से ही उपलब्ध है तो आप उसका प्रयोग करें। अधिकतर तांत्रिक वस्तुएँ एवं यंत्र आदि प्रयोग के बाद विसर्जित कर दिए जाते हैं, क्योंकि हम उनके साथ अपनी समस्याओं को अपने दुर्भाग्य को भी जोड़ देते हैं, इसलिए उन्हें अपने साथ रखने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। विसर्जन का अर्थ रास्ते पर फेंकने से नहीं है,उनका भी विधिवत् सम्मानपूर्वक विसर्जन हो।

जहाँ तक संभव हो, विसर्जन सामग्री किसी पीपल के पेड़ के पास छोड़ दें, बहती हुई नदी, नहर में विसर्जित कर दें अथवा तालाब, सरोवर कोई हो उसमें विसर्जित कर दें। यदि ऐसी कोई भी सुविधा नजर नहीं आए तो किसी मंदिर आदि में प्रभु के चरणों में सौंप दें।

इन सभी प्रयोगों में अधिकांश शब्द जो बार–बार प्रयोग होंगे, उनके बारे में जान लें –

बाजोट – लकड़ी की छोटी–सी चौकी जो सामान्यतः पूजा–पाठ के काम में आती है।

आसन – आपके बैठने के लिए जो आसन प्रयोग हो उसके बारे में जान लें। आपके और पृथ्वी के मध्य जो दूरी है वह यह आसन ही है। आसन का प्रयोग इसलिए आवश्यक है कि आप जो शक्ति जप से उत्पन्न करेंगे वह अर्थिंग के माध्यम से धरती में प्रवेश कर जाएगी। इसी शक्ति के क्षय को रोकने के लिए आसन का प्रयोग किया जाता है। आपने देखा होगा कि ऋषि–मुनि साधना करते समय पद्मासन लगाते थे, जिससे उनके पैर के अंगूठे पृथ्वी पर स्पर्श नहीं होते थे। आप साधनाओं के अनुसार आसन का रंग जान लें एवं जहाँ तक संभव हो ऊनी आसन का प्रयोग करें।

- लक्ष्मी, ऐश्वर्य, धन संबंधी प्रयोगों के लिए पीले रंग के आसन का प्रयोग करें।
- वशीकरण, उच्चाटन आदि प्रयोगों के लिए काले रंग के आसन का प्रयोग करें।
- बल, शक्ति आदि प्रयोगों के लिए लाल रंग के आसन का प्रयोग करें।

वस्त्र – लक्ष्मी संबंधी प्रयोगों में आप पीले वस्त्रों का ही प्रयोग करें। यदि पीले वस्त्र न हो तो मात्र धोती पहन लें एवं ऊपर चादर लपेट लें। आप चाहे तो धोती को केशर या हल्दी या पीले रंग में रंग सकते हैं।

साधना के समय मुँह – अधिकांश प्रयोगों में साधना के समय किस ओर मुँह होना चाहिए दिया रहता है। लेकिन यदि किसी प्रयोग में यह निर्देश नहीं दिया हुआ हो तो आप पश्चिम की ओर मुँह करके साधना/प्रयोग संपन्न करें।

अष्टदल – किन्हीं साधना प्रयोगों में अष्टदल बनाने का निर्देश होगा। अष्टदल का चित्र इस प्रकार बनायें –

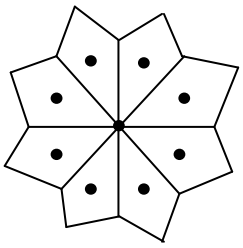

षट्कोण – किन्हीं साधना प्रयोगों में षट्कोण बनाने का निर्देश होगा। षट्कोण इस प्रकार बनायें–

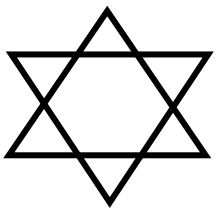

सावधानियाँ :– साधनायें एवं प्रयोग करने से पहले कुछ सावधानियों पर गंभीरतापूर्वक विचार कर लें।

1. एक व्यक्ति कितने ही प्रयोग कर सकता है, कोई पाबंदी नहीं है। लेकिन एक प्रयोग करने के बाद दूसरे प्रयोग करने के लिए उसे पुनः हाथ–मुँह धोकर बैठना होगा।
2. हर प्रयोग करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि आप किस कार्य के लिए यह प्रयोग कर रहे हैं। संकल्प में अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र, शहर, देश का नाम लें।
3. समय से पूर्व ही सामग्री आदि साधना वाले स्थान पर एकत्र कर लें।
4. धुले हुए शुद्ध पूजा के समय पहनने वाले वस्त्र पहले से ही तैयार रखें।
5. लकड़ी की चौकी/पट्टा पूजा स्थान पर पहले से ही धो कर रख दें।
6. पूजन में कार्य आने वाला दीपक, घी–तेल, चावल, कुंकुम, रोली, केशर जो भी पूजा के लिए आवश्यक वस्तुएँ चाहिए, समय से पहले तैयारी कर एकत्रित कर लें।
7. कंबल अथवा कुश का आसन तैयार रखें।

8. जप करने की माला संभाल कर रखें। यदि आपके साथ अन्य व्यक्ति भी साधना करने वाले हैं, तो गोमुखी का प्रयोग करें, जिससे जाप करते हुए हाथ किसी को नजर नहीं आए।
9. साधना स्थल में प्रवेश करने से पूर्व ही स्नान कर लें।
10. साधना समाप्त होने पर यथाशक्ति दान–पुण्य अवश्य करें। किसी भी सफाई करने वाले व्यक्ति को, कोढ़ी को, शारीरिक रूप से अपंग व्यक्ति को अपने पहनने के कपड़े, अनाज आदि अपने शरीर पर से सात बार घुमा कर दान करें।
11. साधना काल में पूर्ण पवित्रता के साथ जप करें।
12. साधक को पीले रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए। पुरुषों को धोती एवं दुपट्टा दोनों पीले रंग के हों। स्त्रियाँ पीली साड़ी पहन सकती हैं।
13. जिस प्रयोग में विसर्जन सामग्री किसी चौराहे पर, तिराहे पर अथवा रास्ते पर रखने का विधान लिखा हो तो कृपया विसर्जन करते समय घर से एक लोटा या गिलास पानी भर कर साथ ले जाएं, हाथ में सब्जी आदि काटने का चाकू, छुरी आदि साथ ले जाएं। विसर्जन सामग्री रास्ते पर रखने के बाद उसके चारों ओर चाकू से गोला कर दें और गोलाई में पानी की धारा कर दें। अब बिना पीछे देखे घर चले आएं और हाथ, पैर, मुँह धो लें।

लीजिए आपकी मनोकामना पूर्ति के लिए, भौतिक समृद्धि के लिए, धन प्राप्ति के लिए, महालक्ष्मी की कृपा के लिए सिद्धि दायक साधना प्रयोग प्रस्तुत है (देखें अगला पृष्ठ) –

भौतिक समृद्धि के चमत्कारिक प्रयोग

(1). **शादी–विवाह हेतु** :– विघ्न विनाशक गणपति जैसा कि हम सभी जानते ही हैं कि सभी समस्याओं का समाधान करने वाले और ऋद्धि–सिद्धि देने वाले हैं। तभी तो वे सभी देवों से पहले पूजे जाते हैं। कोई भी शुभ कार्य इनके आगमन के बिना संभव ही नहीं है।

विवाह प्रसंग भी इन्हीं शुभ प्रसंगों में से एक है, जहाँ गणपति का आगमन विशेष रूप से किया जाता है। इस साधना हेतु कुछ नियम हैं, जैसे– माला रूद्राक्ष का प्रयोग करें। जप के लिए एक ही निश्चित समय रखें। स्थान भी एक ही रखें, नीचे आसन जरूर लगायें। शाकाहारी भोजन करें। अब धनत्रयोदशी के दिन या बुधवार या गुरु पुष्य नक्षत्र के दिन स्नान आदि से निवृत होकर पूजन स्थान पर बैठें। फिर संकल्प लें।

संकल्प :– मैं..... सुपुत्र श्री.....(पिता जी का नाम)..... अमुक स्थान निवासी अमुक कार्य के लिए नित्य 5 माला जप 5 दिनों तक करने का संकल्प लेता हूँ। स्वयं गणपति मेरे इस पावन कार्य में उपस्थित होकर इसे सफल बनायें।

अब पूजा स्थान में रखी गणपति के प्रतिमा की पूजा–अर्चना करें और जप करें। बहुत–से साधकों को अनुभव भी हुआ कि श्री गणेश जी उनके पास उपस्थित हैं। पाँच दिनों के जप के पश्चात् माला किसी शिव मंदिर में शिव चरणों में अर्पित कर दें। निश्चय ही आप शीघ्र अतिशीघ्र समस्या से मुक्त होंगे। आपकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।

मंत्र :– **ॐ गं गणपतये नमः।**

(2). **सुख–संपत्ति प्राप्त करने के लिए** :– श्रीगणेश–लक्ष्मी यंत्र की पूजा से, सुख–शांति व श्री वृद्धि होती है। घर में वातावरण आनंददायक होता है। व्यापारियों के व्यवसाय में बाधा दूर होकर, धन का आवगामन सुचारू रूप से होता है।

धन त्रयोदशी को प्रातः काल स्नान करके या जब साधना करना चाहे, तब स्नान करके निर्मल मन से कामना करने पर अभीष्ट सिद्धि होती है।

श्री गणेश जी के आगे शुद्ध घी का दीपक व लक्ष्मी जी के आगे चमेली के तेल का दीपक प्रज्वलित कर एक कलश पर नारियल स्थापित करें। कलश पर रोली से स्वास्तिक बनायें, कलश की कुंकुम व चावल से पूजा करें, पुष्प चढ़ायें। अब गणेश जी के आगे लाल फूल व लक्ष्मी जी के आगे सफेद फूल चढ़ायें। अब हृदय में अपनी संकल्प कामना को उच्चारण कर कुछ मिष्ठान चढ़ा दें और श्रद्धानुसार लक्ष्मी और गणेश जी की स्तुति कर निम्नांकित मंत्र का जप करें।

मंत्र :– **ॐ लम्बोदराय विकटो विघ्ननाशो विनायकः।**

इस तरह सात माला जपें। अब माला रख दें और हाथ में कुछ चावल व पुष्प की पंखुड़ियाँ लेकर लक्ष्मी जी को चढ़ायें, उनका पूजन करें और निम्नोक्त मंत्र की 3 या 5 माला जप करें।

मंत्र :– **ॐ श्रीं ह्रों श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रों श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

पूजन के बाद प्रसाद ग्रहण कर, मीठा खाकर, जल पीकर, कुछ क्षण विश्राम कर अपने नित्य प्रति के कार्य–व्यवसाय को कर सकते हैं।

(3). **दरिद्रता नाशक प्रयोग** :– कई बार देखा गया है कि कल तक जो दीन–दुःखी थे, आज उनके पास अन्न–धन का भंडार है। घर पुत्र–पौत्र से परिपूर्ण है। यह हर गृहस्थ की कामना होती है।

इस साधना हेतु घर के किसी स्थान विशेष को पूर्ण शुद्ध कर लें। स्नान आदि से पवित्र होकर, पश्चिम दिशा की ओर कुश के आसन पर ऊन का आसन तथा उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर बैठें। वहीं लकड़ी की चौकी पर शुद्ध पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर माता महालक्ष्मी का यंत्र या मूर्ति या चित्र स्थापित करें। जप करने के लिए कमलगट्टे की माला लें। माला संस्कारित होनी चाहिए। जप से पहले माला की भी पूजा कर लें। धन त्रयोदशी से नित्य तीन माला जप करें। महालक्ष्मी को कमल का पुष्प चढ़ायें। पुष्प किसी थाली में स्थापित करें। दूध और दूर्वा का अर्ध्य दें। प्रार्थना करें कि हे माता! मेरे घर में स्थायी निवास करो। सात दिनों तक नित्य इसी क्रम में पूजा करें।

दिन में एक बार खीर का भोजन करें। किसी दूसरे का भोजन न लें। इस प्रकार जप करने से माता लक्ष्मी की कृपा से धन–प्राप्ति के संस्कार और साधन प्राप्त होंगे। सात दिन बाद यंत्र व माला केले के वृक्ष की जड़ में विसर्जित कर दें।

मंत्र :– **ॐ लक्ष्मी श्रीं श्रीं कामबीजाय फट्।**

सामग्री – महालक्ष्मी यंत्र व कमलगट्टे की माला।

(4). **विघ्न–बाधा निवारण हेतु** :– हरिद्रा गणपति की उपासना से जीवन की समस्त विघ्न बाधाओं का नाश होता है तथा सभी मनोकामना की पूर्ति होती है।

साधना काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य तथा पवित्रता अनिवार्य है। साधना तीन दिनों तक नित्य पूर्ण श्रद्धा–भक्ति से करें। साधना काल में 3 माला जप नित्य हरिद्रा (हल्दी) माला से करना है। गणेश जी को लाल फूल चढ़ायें व प्रसाद में लड्डू का प्रसाद चढ़ायें। मन, कर्म व वचन से पवित्रता पहली शर्त है। जप की समाप्ति पर यंत्र व माला बहते जल (किसी नदी) में प्रवाहित कर दें। ब्राह्मण को भोजन करवायें। आपकी कार्य विशेष बाधा दूर होगी।

मंत्र :– **ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रा गणपतये वर वरद सर्वजन हृदय स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।**

(5). **संपत्ति वैभव सिद्धिदायक साधना** :– आज के युग में संपत्ति, वैभव तथा भौतिक सिद्धियों का महत्व कुछ विशेष ही है। आज का युग ऐसा ही है कि गरीबी अभिशाप है। यदि आप भी साधन–संपन्न होना चाहते हैं, तो यह साधना आपके लिए ही है।

इस साधना हेतु आप स्वर्ण, रजत या ताम्र पत्र पर अंकित महालक्ष्मी यंत्र का विधिवत प्राण– प्रतिष्ठित करवा कर प्रयोग करें। दीपावली में महानिशा काल में सवा सौ बार मंत्र का जप करें। यंत्र को पंचामृत से शुद्ध करें। अब थाली में केसर से " **श्रीं** " बीज मंत्र लिखें और इस पर यंत्र स्थापित करें। अब पुष्प चढ़ायें। धूप–दीप करें, दीपक प्रज्वलित करें। जहाँ तक हो सके चमेली के तेल का दीपक प्रयोग करें। अब कमलगट्टे की माला से निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र – **ॐ ऐं ह्रों श्रीं क्लीं ह्सौः जगत् प्रसूत्यै नमः।।**

तीन दिनों तक निश्चित समय पर मंत्र जप करें। फिर यंत्र को लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रख दें व माला को लक्ष्मी–विष्णु के मंदिर में चढ़ा दें। फिर कोई शक्ति नहीं जो आपको सफलता की ओर बढ़ने से रोक सके।

सामग्री – महालक्ष्मी यंत्र या कमला यंत्र एवं कमलगट्टा की माला

(6). **व्यवसाय में सफलता** :– व्यावसायिक कार्य अर्थोपार्जन के लिए किया जाता है। आर्थिक समृद्धि एवं सौख्य हेतु यह विशेष विधान है। शायद ही कोई ऐसा व्यापारी होगा, जो अपने व्यवसाय में उन्नति नहीं चाहता होगा। क्योंकि एक व्यक्ति की पहचान ही उसके व्यवसाय के कारण होती है। व्यवसाय में सफल होना हर व्यवसायी की प्रबल इच्छा होती है।

इसके लिए निम्नांकित मंत्र को आप भोजपत्र पर केसर से लिखें। अब तिजोरी में इसको स्थापित करें और धूप–दीप करें। फिर तिजोरी के सामने बैठकर कमलगट्टे की माला से निम्न मंत्र का जप 5 माला करें। फिर नित्य या प्रत्येक शुक्रवार को 1 माला जप करें। चमत्कार आप स्वयं देखेंगे।

मंत्र – ॐ ह्रों श्रीं नमः।

सामग्री – कमलगट्टे की माला।

(7). **पदोन्नति (प्रमोशन) के लिए** :– कार्य स्थल पर एक ही पद पर आसीन रहना किसे पसंद है। प्रगति की चाहत हर किसी में होती है। ठहराव जीवन की हार है, चलना व गतिशीलता ही जीवन का सार है। इस हेतु व्यक्ति प्रयासरत रहता है।

यह साधना अत्यंत आसान है। धन त्रयोदशी की निशा काल में स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें और पूर्व की ओर मुख कर बैठें। अब सामने लकड़ी के चौकी पर पीला वस्त्र बिछाये और उस पर मूंग की ढेरी कर, उस पर सात हकीक विग्रह स्थापित करें। अब इन हकीक पर केसर का तिलक लगायें। अब कार्य सिद्धि माला से निम्नांकित मंत्र का जप एक माला करें और एक विग्रह पर पुष्प चढ़ायें। इस प्रकार सात माला जप करें और प्रत्येक माला जप के पश्चात एक फूल अगले हकीक विग्रह पर चढ़ायें। जप, हवन, आरती इत्यादि के बाद प्रसाद स्वयं ग्रहण करें व परिवार में बांट दें। दूसरे दिन माला सहित समस्त सामग्री को बांधकर किसी बहते जल जैसे नदी में प्रवाहित कर दें। घर आकर हाथ–मुँह धो लें।

मंत्र – **ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, विष्णुपत्नयै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।।**

सामग्री – 7 हकीक पत्थर एवं कार्य सिद्धि माला।

(8). **रोग निवारक एवं ऋण मोचक यंत्र साधना** :– शास्त्रों में भी लिखा गया है कि पहला सुख निरोगी काया, दूजे सुख घर में हो माया। और ये हम सब जानते हैं कि सातों सुख विरले ही किसी को प्राप्त होता है। एक स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए यह असहनीय होता है कि वह किसी का ऋणी है, कर्जदार है। कोई उससे पैसा मांगता है। वह किसी का कर्जदार है। कर्ज व रोग ऐसा शत्रु है, जिसे व्यक्ति को स्वयं झेलना होता है व बचाव भी खुद ही को करना होता है। उसे ही स्वयं की मदद करनी पड़ती है। अपने मनोबल, अपने आत्मबल को ही इतना तेज करने की आवश्यकता होती है, कि उनसे भिड़ सके, सामना कर सके।

इस हेतु धन्वन्तरि त्रयोदशी यानि धनतेरस के दूसरे दिन प्रातः शुद्ध होकर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें और लाल आसन का प्रयोग करें। सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछायें। अब मंगल यंत्र को स्थापित करें। लाल पुष्प चढ़ायें, रोली का तिलक करें और तेल का दीपक जलायें। धूप–दीप कर मूंगे की माला से जप करें। प्रसाद में गुड़ या लाल शक्कर जरूर चढ़ायें।

मंत्र – **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।**

कम से कम सात माला जप करें। अब यंत्र व माला को वहीं रहने दें व दीपावली के दिन मात्र धूप–दीप कर एक माला जप करें। दीपावली के दूसरे दिन प्रातः काल में इस सामग्री को उसी वस्त्र में लपेट कर

घर से बाहर दक्षिण दिशा में गड्ढा खोदकर दबा दें। कहीं भी। घर आकर हाथ–मुँह धो लें। लाभान्वित होंगे।

सामग्री – मंगल यंत्र व मूंगे की माला।

(9). **सौभाग्य प्राप्ति हेतु** :– एक स्त्री का सौभाग्य सुख सब पति से जुड़ा होता है। तभी हर स्त्री की कामना यही होती है कि वह सदा सुहागिन रहे, उसका सौभाग्य अमर रहे। इस हेतु नरक चतुर्दशी के दिन (दीपावली से एक दिन पहले) शाम के समय जब दीय रखे, तो उसके बाद स्नान करके पूजा स्थान में सौभाग्य कवच को स्थापित करें। अब धूप–दीप करें, लाल पुष्प चढ़ायें तथा लाल कलावा (मौली) अर्पित करें। अब वहीं बैठकर किसी भी माला से निम्न मंत्र का जप 108 बार करें। अब जप की समाप्ति पर सौभाग्य कवच को लाल धागे में बांधकर स्वयं धारण करें या पति के गले में धारण करवायें। आपका सौभाग्य अविचल रहे, यही कामना मन में श्रद्धा रखें।

मंत्र – **ॐ सौभाग्य सूत्र वरदे, सुवर्ण मणि संयुक्तम्। कंठे बध्नामि देवेशि, सौभाग्यं देहि मे सदां।।**

सामग्री – सौभाग्य कवच

(10). **स्थायी लक्ष्मी साधना** :– लक्ष्मी तो चंचला है, एक स्थान पर टिकना इसका स्वभाव नहीं व मनुष्य ऐसा प्राणी है कि वह लक्ष्मी को वश में करना चाहता है। लक्ष्मीपति बनने हेतु उसे वश में करना पड़ता है। इस साधना हेतु दीपावली से उपयुक्त समय क्या हो सकता है। प्रातः में स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध मन से उत्तर दिशा में मुँह रख सके, इस तरह बैठें। अब चौकी पर पीला वस्त्र बिछायें। स्वयं के बैठने के लिए ऊनी आसन का प्रयोग करें। अब चौकी पर गेहूँ की ढेरी करें। उस पर 7 गोमती चक्र स्थापित करें। अब उस पर कुंकुम का तिलक करें और हर चक्र पर एक–एक सिक्का अर्पित करें। अब पुष्प अर्पित कर धूप–दीप करें और प्रसाद, नैवेद्य एवं फल अर्पण करें। फिर निम्नांकित मंत्र की 7 माला जप करें। हर माला जाप की समाप्ति के बाद हर चक्र पर एक पुष्प अर्पित करें। जप की समाप्ति पर श्रद्धावत दण्डवत् कर उठ जायें व नित्य कार्य में व्यस्त हो जायें। रात्रि में दीपावली पूजन के समय यहाँ भी धूप–दीप करें। दूसरे दिन समस्त सामग्री किसी सुनसान स्थान में छोड़ आयें। शीघ्र ही चमत्कारिक प्रगति पायेंगे।

मंत्र – **ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।**

सामग्री – 7 गोमती चक्र एवं कार्य सिद्धि माला।

(11). **पद्मिनी यक्षिणी साधना** – शास्त्रों में कहा गया है कि प्रारब्ध का लिखा मिटाना मनुष्य के हाथ में नहीं। लेकिन जिसने प्रारब्ध लिखा है, उसे प्रसन्न करके क्या प्रारब्ध नहीं बदला जा सकता? क्या प्रसन्न होने पर वो ईश्वर अपने लिखे लेख को सुधार नहीं सकता? यह मुश्किल जरूर है, पर नामुमकिन नहीं, क्योंकि मनुष्य की दृढ इच्छा शक्ति के आगे तो भगवान को झुकना ही पड़ा है। पुराण गवाह है। आवश्यकता है, मनुष्य के दृढ़ संकल्प शक्ति की।

इस साधना हेतु पूर्व की ओर मुँह करके बैठें। अपने सामने की जगह को जल से शुद्ध करें। चंदन से जगह लेपें। अब उस पर एक लघु नारियल व तीन गोमती चक्र स्थापित करें। उस पर केसर का तिलक करें। गुगल जलायें व दो माला निम्नांकित मंत्र का जप करें। जप करते हुए बीच–बीच में कुछ पुष्प की पंखुड़ियाँ चढ़ाते जायें। अब जप की समाप्ति पर एक सिक्का, अगर चांदी का हो तो उत्तम, अर्पित करें। यह जप धन त्रयोदशी से लेकर दीपावली तक कभी भी कर सकते हैं। जप की समाप्ति पर दूसरे दिन प्रातः समस्त सामग्री को इकट्ठा कर किसी मंदिर में चढ़ा दें। पद्मिनी यक्षिणी प्रसन्न होकर धन–धान्य व ऐश्वर्य प्रदान करती है।

मंत्र – **ॐ क्रीं पद्मिनी फट्।**

सामग्री – लघु नारियल–1, गोमती चक्र–3, यक्षिणी माला–1

(12). **आर्थिक अनुकूलता का प्रचण्ड उपाय** – व्यापार, नौकरी या जो भी कर्म मनुष्य करता है, उसका मुख्य उद्देश्य अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना होता है। ईश्वर भी उसी का साथ देता है, जो अपनी मदद स्वयं करता है। यदि आप कर्म में विश्वास करते हैं तो सफलता आपके सामने खड़ी है।

इस साधना हेतु सबसे पहले किसी चांदी या तांबे की थाली में सवा पाव चावल बिछायें। उत्तर की तरफ मुँह रख सकें। इस तरह से आसन पर बैठें। एक घी का दीपक प्रज्वलित करें और अब नारियल का एक गोला लें। उस पर कुंकुम से '' **श्रीं** ''लिखें और उसे चावल पर स्थापित करें। अब नारियल पर पुष्प चढ़ायें और दूध से बना प्रसाद भोग लगायें।

अब उत्साहित मन से माता लक्ष्मी के निम्नांकित मंत्र का जप 5, 7, या 11 माला या जितना अधिक हो सके, करें। यह जप आप पाँचों दिन करें, तो ज्यादा उपयुक्त होगा। अब छठे दिन किसी ब्राह्मण को भोजन करवा कर चावल तथा नारियल व कुछ दक्षिणा देकर उन्हें संतुष्ट करें। जप कमलगट्टे की माला से ही करें।

मंत्र – **ॐ ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै गरूड़ वाहिन्यै श्रीं ऐं नमः।**

यह मंत्र अत्यन्त श्रेष्ठ और व्यापार वृद्धि में विशेष रूप से सहायक है। दूसरे रूप में इसको व्यापार लक्ष्मी मंत्र भी कह सकते हैं, क्योंकि जहाँ यह आर्थिक अनुकूलता देता है, वहीं जीविकोपार्जन के साधन में भी उन्नति देता है। ऐसा करने पर साधक को मनोवांछित लक्ष्मी प्राप्त होती है। व्यापार में उन्नति होने लगती है तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्णता और संपन्नता प्राप्त होती है।

सामग्री – कमलगट्टे की माला

(13). **दशाक्षर लक्ष्मी साधना** :– यदि व्यक्ति के घर में दरिद्रता छा रही हो और प्रयत्न करने पर भी वह आर्थिक सफलता प्राप्त नहीं कर रहा हो, तो उसे यह साधना करनी श्रेयस्कर है।

साधक को स्नानादि कर सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुँह कर के आसन पर बैठना चाहिए। आसन किसी भी रंग का हो सकता है, परंतु काला रंग कदापि प्रयोग न करें। साधक एक वक्त का भोजन करे व मांस, मदिरा, प्याज इत्यादि का सेवन न करें। अब सामने चौकी पर सात तांत्रोक्त नारियल गेहूँ की ढेरी पर स्थापित करें। अब उन पर सफेद चंदन का तिलक लगायें। अक्षत, पुष्प, व मौली चढ़ायें और निम्नांकित मंत्र का जप सफेद हकीक माला से 21 माला करें। जप एक रात्रि में हो अथवा तीन रात्रि में। लेकिन जप संख्या व समय निश्चित रखें। जहाँ तक संभव हो सके कमल का पुष्प चढ़ायें, क्योंकि यह लक्ष्मी का सर्वाधिक प्रिय पुष्प है।

मंत्र – **ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।**

साधना की समाप्ति पर समस्त सामग्री का माला सहित बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें।

सामग्री – 7 तांत्रोक्त नारियल एवं 1 सफेद हकीक की माला।

(14). **दरिद्रता नाशक प्रयोग** :– किसी भी त्योहार को मनाने का सही अर्थ यही है सबसे पहले तो घर से दरिद्रता दूर की जाए एवं सुख–सौभाग्य के क्षण आयें और दीपावली तो है ही धन–संपत्ति प्राप्त करने का त्योहार। अतः आपके कष्टों से मुक्ति हेतु यह विशिष्ट साधना है।

इस साधना हेतु एक मोती शंख लें। अब स्नानादि से निवृत होकर पूर्व में मुँह करके बैठें और सामने बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछायें। अब उस पर पीले रंगे हुए चावल की ढेरी करें। अब उस पर एक मोती शंख स्थापित करें और उस पर केसर का तिलक करें। और मंत्र जप करते हुए चावल के दाने डालते रहें। जप कम–से–कम 3 माला करें। जहाँ तक हो सके जप मुंगे की माला से करें। दूसरे दिन समस्त सामग्री को किसी बहते जल में विसर्जित कर दें। इसी भावना के साथ की मैं अपनी दरिद्रता विसर्जित कर रहा हूँ।

मंत्र – **ॐ श्रीं ह्रों क्रीं ऐं।**

यह साधना मात्र एक दिन की है। इसे इन पाँच दिनों में कभी भी संपन्न कर सकते हैं।

(15). **तांत्रिक प्रयोगों के निदान हेतु** :– समाज ऊपरी तौर पर भले ही सभ्य और आधुनिक कहा जाने लगा है। लेकिन अंदर जिस प्रकार से घात–प्रत्याघात चलते रहते हैं कि व्यक्ति चारों तरफ से दुविधा में फंस

जाता है, क्योंकि आज के व्यक्ति में खुद में तो पुरुषार्थ की कमी है, लेकिन वह दूसरों को बढ़ते नहीं देख सकता है। इसलिए वह सामने वाले को तंत्र प्रयोग से बांधने की कोशिश करता है कि वो काम नहीं कर पाए। दीपावली की रात्रि में ऐसा प्रयोग करने से यदि कोई तांत्रिक प्रयोग, व्यापार बंधन, बुद्धि स्तम्भन, गर्भ बंधन जैसे काले प्रयोग करे या करवाए हो तो वे भी पलट कर विपक्षी के पास लौट जाते हैं।

इस प्रयोग हेतु दस तांत्रोक्त नारियल को लेकर भूमि पर रखें तथा प्रत्येक फल के आगे एक तेल का दीपक जला कर काली हकीक माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

मंत्र – **ॐ स्त्रां ॐ स्त्रीं ॐ स्त्रूं ॐ स्त्रः।**

यह मंत्र जप एक ही रात्रि में पूर्ण हो जाना चाहिए। साधक दस बजे रात के बाद कभी भी बैठ सकता है। और दूसरे दिन सुनसान जगह में गड्ढा खोदकर सामग्री दबा दें। इससे व्यापार बंधन आदि प्रयोगों से मुक्ति मिल जाती है। सामग्री– 10 तांत्रोक्त नारियल, काली हकीक माला

(16). **शत्रु शांत होते ही हैं, इस प्रयोग से** :– जीवन में सभी सुख हो किंतु शत्रु बाधा बनी रहे, तो उससे अधिक दुःखदायी कुछ भी नहीं होता। हर समय आशंका बनी रहती है कि पता नहीं अगले पल क्या हो? प्रकट शत्रु से तो एक बार फिर भी निपटा जा सकता है, लेकिन जहाँ कोई छिपकर वार करने की चेष्टा में हो तो वहाँ समस्य और भी अधिक गंभीर हो जाती है। वहाँ लड़े भी तो किससे ? ऐसी ही समस्याओं और विशेष कर पीछे से घात लगाकर कुचक्र रचकर वार करने वाले के लिए समापन की सही रात्रि यही है।

दीपावली की रात्रि के लिए विशेष रूप से चैतन्य व मंत्र सिद्ध किया गया शत्रु बाधा निवारण कवच इस समस्या का सही समाधान है। रात्रि में दस बजे के बाद एकांत में बैठ कर लाल वस्त्र धारण कर अपने सामने शत्रु बाधा निवारण कवच स्थापित करें। इस पर लाल धागा पीरो लें। अब हकीक या मूंगे की माला से निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र – **ॐ ह्रौं ग्लौं भगवति दण्ड धारिणी अमुकं अमुकं शीघ्रं रोधय रोधय भंजय भंजय श्रीं ह्रीं राज्यै ॐ हुं हुं हुं।**

जप कम से कम चार माला करें। फिर मुंगे की माला को दूसरे दिन किसी हनुमान मंदिर में चढ़ा दें और कवच धारण कर लें। ऐसा करने से तीव्र से तीव्र शत्रु शांत होता है और कई बार तो दूसरे ही दिन वह आकर क्षमायाचना या सुलह समझौते जैसे स्वर में बात करने लग जाता है।

सामग्री – शत्रु बाधा निवारण कवच एवं मंत्र सिद्ध मूंगे या हकीक की माला

(17). **लक्ष्मी का स्वागत कीजिए** :– दीपावली की रात्रि पूर्ण रूप से चैतन्य और लक्ष्मी साधनाओं के लिए अनुकूल कही गयी है। यदि आपके मन में कोई विशेष लक्ष्मी साधना करने की इच्छा हो तो दीपावली से बढ़कर कोई श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं है। इस साधना को अटूट लक्ष्मी साधना की विशेष संज्ञा दी गयी है। इस साधना को संपन्न करने के बाद साधक को जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं देखना पड़ता है। यदि देव योग से कोई आमदनी बंद भी हो जाए तो कोई न कोई दूसरा रास्ता अविलम्ब प्राप्त हो जाता है। साथ–ही लक्ष्मी के समस्त स्वरूपों की प्राप्ति की और जीवन में उनको चिरस्थायी बनाये रखने की भी यही साधना है। देश के कुछ महान उद्योगपतियों की संपन्नता और ऐश्वर्य का रहस्य यही साधना है। इस प्रयोग हेतु दीपावली की रात्रि में आप उत्तर मुँह करके बैठें। अब सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछायें। उस पर चावल की ढेरी करें। अब उस पर लघु शंख स्थापित करें। उसे केसर का तिलक करें और उसमें इत्र मिश्रित जल डालें। तांत्रोक्त लक्ष्मी साधनाओं में इसा प्रभाव आश्चर्यजनक माना गया है। अतः इसे लक्ष्मी रूप मान उसी प्रकार से पूजन करें व कमलगट्टे की माला से निम्न दुर्लभ मंत्र की एक माला मंत्र जप करना चाहिए।

मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं श्रीं क्लीं ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।**

अब मंत्र जप के बाद सामग्री को नदी या सरोवर में प्रवाहित कर दें।

सामग्री – लघु शंख–1, एवं कमलगट्टे की माला।

(18). **जीवन में मधुरता हेतु वशीकरण प्रयोग** :– सम्मोहन, वशीकरण, यक्षिणी, साधनाओं, अप्सरा साध्नाओं की यह विशेष रात्रि है और कोई भी प्रयोग किया जाय सफलता मिलती ही है। फिर भी यदि दिवस विशेष को ध्यान में रखकर कोई साधना संपन्न की जाय तो सफलता की संभावनायें कई गुणा बढ़ जाती है। जीवन में मधुरता की आशा किसे नहीं रहती है। अतः प्रेम संबंधी, विवाह संबंधी या दाम्पत्य जीवन में मधुरता घोलने की आगामी वर्ष को रसमय बनाने की यही साधना कही गयी है। यह केवल प्रेमी–प्रेमिका के संबंधों को लेकर नहीं, बल्कि विवाहित स्त्री–पुरुषों को भी ध्यान में रखकर ढूंढी गयी है, जिससे कि उनके जीवन की नीरसता एवं जड़ता समाप्त हो सके।

इस साधना के लिए आवश्यक है वशीकरण गुटिका व स्फटिक माला। सर्वप्रथम जिसे सम्मोहित करना है, उसके नाम का संकल्प करें। फिर गुटिका पर केसर का तिलक करें। गुटिका को किसी थाली में '**ॐ**' लिखकर स्थापित करें। अब पुष्प, इत्र इत्यादि समर्पित करें। स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जप 2 माला करें। मंत्र – **ॐ कामाय क्लीं क्लीं कामिन्यै क्लीं**।

यदि आप विवाहित दंपत्ति हैं, तो एक दूसरे के लिए यह प्रयोग संपन्न कर अतिरिक्त मधुरता पर सकते हैं, अपने जीवन में। माला एक ही प्रयोग कर सकते हैं। गुटिका अलग–अलग प्रयोग करें। अब प्रयोग की समाप्ति पर गुटिका व माला को किसी अशोक या पीपल के वृक्ष की ओट में दबा दें।

सामग्री – वशीकरण गुटिका–1 एवं स्फटिक माला

(19). **धनादीश कुबेर साधना** :– लक्ष्मी प्राप्ति, आकस्मिक धन प्राप्ति, ऋण निवारण, अखण्ड सौभाग्य, भाग्योदय तथा मनः इच्छापूर्ति के लिए यह साधना सर्वोपरि एवं अद्वितीय है। इस साधना में मंत्र–सिद्ध, प्राण–प्रतिष्ठित 'धनादीश कुबेर यंत्र' तथा स्फटिक माला का प्रयोग करना चाहिए। साधक प्रातःकाल या रात्रि में अपनी इच्छानुसार इस साधना को संपन्न कर सकता है। साधक स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर आसन पर बैठ जाए और अपने सामने चौकी पर पीले रंग का आसन बिछाकर मध्य में चावल की ढेरी बनाये और उस पर कुबेर यंत्र स्थापित करें एवं इसकी चावल और कुंकुम इत्यादि से पूजन करें।

सर्वप्रथम गुरु का ध्यान करें। क्योंकि गुरु पूजन के बिना किसी भी साधना में सफलता नहीं मिलती। इसके पश्चात् अपनी इच्छापूर्ति हेतु हाथ में जल लेकर संकल्प करें व जल को भूमि पर छोड़ दें और स्फटिक माला से निम्नांकित मंत्र की 11 माला जप करें।

मंत्र – **ॐ ह्रीं कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्य समृद्धि देहि देहि नमः**।

पूजन के पश्चात् यंत्र के समक्ष भोग लगाए एवं सभी में बांट दें। यंत्र को रात्रि में ही पूजा स्थान में स्थापित कर दें। स्फटिक माला को सदैव यंत्र के साथ रखें। जब भी जप करना हो इस माला को प्रयोग करें।

(20). **दरिद्रता विनाशक महागणपति साधना** :– जैसा कि प्रसिद्ध है गणपति महाराज विघ्नहर्त्ता हैं। उनकी साधना समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाली है। इस साधना को धनत्रयोदशी से लेकर भाई दूज तक भी किया जा सकता है। दीपावली को वृष लग्न में यह साधना संपन्न करें। इस साधना के लिए साधक को पूर्व की ओर मुख करके पीले आसन पर बैठना चाहिए। सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर 'पारद गणपति' स्थापित करें और कुंकुम से तिलक करके चावल, मौली चढ़ायें और धूप–दीप करके, लड्डू का भोग लगायें। पीली हकीक माल से निम्न मंत्र की 1 माला जप करें।

मंत्र – **ॐ गं गणपतये नमः**।

मोदक का प्रसाद अर्पित करें एवं सभी को बांटें। यदि आप एक दिन की यह साधना कर रहे हैं तो पारद गणपति को अपने पूजन स्थान पर स्थापित कर दें अन्या भाई दूज को जप करने के पश्चात् गणपति को स्थापित करें। साधना संपन्न करने के बाद पीली वस्तुओं का दान करें। प्रत्येक बुधवार को कम–से–कम 54 बार इस मंत्र को अवश्य जप करें।

(21). **दारिद्रय नाशक प्रयोग** :– इस साधना को संपन्न कर व्यक्ति जीवन के समस्त कर्जों से छुटकारा पा लेता है एवं दरिद्री जीवन से मुक्त हो जाता है। इस साधना हेतु साधक को सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा में मुँह करके बैठना चाहिए। सामने बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर चावल की ढेरी करें फिर उस पर 'श्वेतार्क गणपति' स्थापित कर कुंकुम, चावल, मौली से पूजा करें व धूप–दीप करें। गणपति को सिंदूर अर्पित करें। फिर लाल मूंगे की माला अथवा प्रवाल की माला से निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र – **ॐ नमो विघ्नहराय गं गणपतये नमः।**

इस मंत्र की 5 माला जप करें एवं सामग्री को (श्वेतार्क गणपति एवं मूंगे की माला) लाल कपड़े की पोटली में बांध लें। दीपावली से दूसरे दिन पोटली गणपति मंदिर में जाकर गणेश जी के चरणों में रखकर दरिद्रतानाश की प्रार्थना करें व घर चले आयें।

(22). श्वेतार्क गणपति के मूल को लाकर जलाया जाय और उसकी राख से दीपावली के दिन सभी को तिलक किया जाय तो वह तिलक लक्ष्मी को आकर्षित करने वाला होता है। इसकी राख को बचाकर रखा जाय और जब कभी आर्थिक संकट दिखाई देने लगे तो इसका तिलक किया जाय तो आर्थिक समस्यायें समाप्त होने लगती हैं।

(23). **व्यापार वृद्धि हेतु** :– व्यापर वृद्धि हेतु यह प्रयोग निःसंदेह आपके व्यापार में बढ़ोत्तरी करेगा। इस प्रयोग हेतु साधक को पूर्व दिशा में मुँह रखकर बैठना चाहिए व सामने बाजोट पर चने के दाल की ढेरी करनी चाहिए। अब इस ढेरी पर व्यापर वृद्धि यंत्र को स्थापित कर हल्दी, कुंकुम से यंत्र की पूजा करें एवं लाल मूंगे की माला से निम्न मंत्र की कम–से–कम 3 माला जप करें।

मंत्र – **ॐ श्रीं सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।**

अब दुकान में मूंगे की माला रखकर उसके ऊपर यंत्र को प्रतिष्ठान में स्थापित कर दें। वर्ष भर तक यंत्र की सदैव पूजा करें, धूप–अगरबत्ती जो भी संभव हो करें। अगली दीपावली पर इस यंत्र को किसी केले के वृक्ष की जड़ में गाड़ दें। अगर चाहे तो दूसरा यंत्र पुनः इसी विधि–विधान से स्थापित करें।

(24). व्यापार वृद्धि यंत्र के साथ कुछ नागकेसर साथ रखने से इसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

(25). व्यापार वृद्धि यंत्र को कमलगट्टे की माला पर स्थापित किया जाय तो यह चमत्कारिक रूप से व्यापार का विस्तार करने लगता है।

(26). व्यापार वृद्धि यंत्र को यदि काले धागे से बांध दिया जाय तो व्यापरिक विपदाओं की समाप्ति होने लगती है।

(27). व्यापार वृद्धि यंत्र को स्थापित कर यदि काजल से पुरा काला कर दिया जाय तो उस व्यापारिक प्रतिष्ठान में, दुकान में कैसा भी संकट हो उसका समाधान हो जाता है। संकट समाधान हो जाने पर उसे जल में विसर्जित करें।

(28). **ऋद्धि–सिद्धि बने रहने हेतु** :– कभी–कभी ऐसा होता है कि जब हम एक निश्चित स्थान पर पहुंच जाते हैं, तब यह डर सताने लगता है कि ये सुख–समृद्धि खत्म न हो जाए या यों कहें कि यह समृद्धि सदैव बनी रहे तब व्यक्ति को यह प्रयोग संपन्न करना चाहिए। इस प्रयोग के लिए पश्चिम दिशा में मुँह किए हुए बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर गेहूँ से स्वास्तिक बनाएं। इस स्वास्तिक पर एक थाली में कुंकुम से 'गं' लिखें। इस इस 'गं' अक्षर अर्थात गणेश के बीज मंत्र की पूजा कर श्वेतार्क गणपति एवं एक लघु नारियल रख दें। लघु नारियल एवं श्वेतार्क गणपति स्थापित कर उसके आस–पास गोलाकार घेरे के समान 7 बिंदिया कुंकुम की लगायें एवं नीचे लिखे गये मंत्र को जपते हुए उस एक–एक लक्ष्मी कारक कौड़ी रख दें। अब सभी कौड़ियों पर कुंकुम अथवा चंदन से तिलक करें। चावल चढ़ायें, पुष्प अर्पित करें। अब लाल चंदन की माला से निम्न मंत्र की कम–से–कम 1 माला जप करें।

मंत्र – **ॐ सर्व सिद्धि प्रदोयसि त्वं सिद्धि बुद्धिप्रदो भवः श्री।।**

अगले दिन किसी कुमारी कन्या (अविवाहित) को पीली वस्तु का भोजन करवायें व दान– दक्षिणा देकर विदा करें। श्वेतार्क गणपति को पूजा स्थान पर स्थापित करें। कौड़ियों एवं लघु नारियल को उसी वस्त्र में बांधकर बहते जल में प्रवाहित कर दें। अथवा बागीचे में गाड़ दें।

(29). **ऐश्वर्य लक्ष्मी साधना** – कई बार जीवन में सब कुछ होते हुए भी सुख नहीं मिल पाता। जिस ऐश्वर्यमय जीवन जीने के लिए अपार श्रम करते हैं, उसी का फल नहीं मिल पाता। अतः जिन्हें जीवन में ऐश्वर्य की चाह है, जीवन में वास्तविक सुख की चाह है वे यह साधना करें। पूर्व या उत्तर दिशा में मुखकर बाजोट पर पीला वस्त्र बिछायें। उस पर प्लेट रखें व बीच में '**श्रीं**' अक्षर कुंकुम से लिखें। अब उस पर पुष्प आदि का आसन लगाकर महालक्ष्मी यंत्र एवं पाँच लक्ष्मीकारक कौड़ियों को स्थापित करें। धूप–दीप करें एवं लाल पुष्प चढ़ायें। दीपक संपूर्ण साधनाकाल तक प्रज्वलित रहे। अब कमलगट्टे की माला से निम्न मंत्र का 1 माला जप करें।

मंत्र- **ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै पूर्ण सिद्धिं देहि देहि नमः॥**

अगली दो रात्रियों में भी यंत्र, माला का संक्षिप्त पूजन कर एक माला मंत्र की जपें। प्रातः काल बाजोट पर बिछे उसी वस्त्र में यंत्र, कौड़ियाँ एवं पुष्प आदि सामग्री लपेट कर नदी या तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दें। अथवा केले के पेड़ के पास रख दें। हाथ जोड़ कर बिना पीछे देखें घर चले आयें। घर आकर हाथ–पैर अवश्य धो लें। माला श्री यंत्र के चित्र को पहना दें, क्योंकि कमलगट्टा लक्ष्मी की प्रिय वस्तु है। लक्ष्मी स्वयं कमल पुष्प पर स्थित हैं।

(30). **स्थिर लक्ष्मी प्रदाता प्रयोग** :– यह स्थिर लक्ष्मी प्रदाता प्रयोग अपने–आप में श्रेष्ठ एवं अद्वितीय है। जिसे सिद्धकर इन्द्र ने भी अपना खोया राज्य वापस पाया। क्योंकि लक्ष्मी हैं यश, मान, सम्मान, कीर्ति, समृद्धि एवं संपन्नता प्रदान करने वाली देवी। भौतिक प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाले व्यक्ति को ये इन्द्रकृत साधना अवश्य ही संपन्न करनी चाहिए।

साधक को चाहिए कि वह अपनी पत्नी सहित इस प्रयोग को संपन्न करे। सबसे पहले स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा–स्थल में आसन पर बैठ जाए, फिर चौकी पर एक पात्र में ''लक्ष्मी बीसा यंत्र'' एवं लघु दक्षिणावर्त्त शंख को स्थापित करें। फिर यंत्र को दूध, दही, घी, शहद, शक्कर अर्पित करें और शुद्ध जल से पुनः धोयें एवं बाजोट पर स्थापित करें। लघु दक्षिणावर्त्त शंख (जिस शंख में कम से कम एक पाव पानी समाता हो, वह शंख श्रेष्ठ कहा जाता है। लेकिन जो साधक आर्थिक स्थिति के कारण बड़ा शंख नहीं ले पायें वे लघु दक्षिणावर्त्ती शंख का प्रयोग करें) को एक कटोरी में चावल भरकर उसे स्थापित करें। स्थापित इस प्रकार करें कि उसकी चोंच अर्थात् पतले वाला हिस्सा आपकी ओर न रहे। अब इस शंख में एक चांदी का सिक्का डालें, थोड़ा–सा केशर मिश्रित जल भरें, पुष्प, चंदन आदि से पूजा करें। फिर धूप–दीप करें, कमल का पुष्प चढ़ायें एवं नैवेद्य रखें। फिर कमलगट्टे की माला से निम्न मंत्र का जप यथाशक्ति (कम से कम 1 माला) करें।

मंत्र – **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै वर वरद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ।**

जब जप समाप्त हो जाए तब तीन दिन तक नित्य प्रतिदिन सुबह यंत्र की पूजा करें या धूप बत्ती करें और चौथे दिन उसे किसी बगीचे में गाड़ दें अथवा अपने घर में किसी गमले में गाड़ दें। यदि इस गमले में छोटा–सा केले का पौधा भी लगा दें तो बहुत शुभ होगा। शंख को अपने पूजा स्थान पर स्थापित कर सदैव इसकी पूजा करें। ध्यान रखें कि शंख कभी खाली न रहे। कमलगट्टे की माला को शंख पर पहना दें। इस प्रकार इस प्रयोग को संपन्न करने के बाद लक्ष्मी की उस घर पर पूर्णरूप से कृपा हो जाती है।

(31). दीपावली के दिन कमलगट्टे की माला के एक–एक मनके को अलग–अलग कर घी, शहद और शक्कर के साथ **'ॐ भगवती महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा'** मंत्र से 108 आहुतियाँ दें तो निश्चय ही लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके जीवन में मधुर बहार आ जाती है।

(32). **साक्षात् लक्ष्मी दर्शन** :– यह मंत्र अत्यंत गोपनीय होने के साथ–साथ महत्वपूर्ण है। मंत्र जप सिद्ध होने पर लक्ष्मी स्वयं सामने प्रकट होती है और साधक को इच्छानुसार वर मांगने को कहती है। जो भी भावना की जाती है वह पूरी होती है। जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

मंत्र – **ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम् सर्वसिद्धि देहि देहि श्रीं क्लीं स्वाहा॥**

मंत्र सिद्ध मूंगे की माला से 11 माला नित्य जप करते हुए 11 दिन मंत्र जप करें।

पारद लक्ष्मी के प्रयोग

(33). लक्ष्मी का आवाहन करते हुए स्पष्ट किया गया है स्वर्ण ग्रास देकर पारद लक्ष्मी प्रतिमा को घर के अग्निकोण में स्थापित किया जाय तो उस घर में निरंतर धन की वर्षा होते रहती है। वर्णन मिलता है कि लक्ष्मी के श्रेष्ठ 108 रूपों में पारदेश्वरी लक्ष्मी का पूजन अद्वितीय सिद्धि प्रदायक, श्रेष्ठ और संपन्नता प्रदान करने वाला है। यदि आपके पास शंख की माला हो तो उसी का प्रयोग करें। बहुत ही शुभ फल प्राप्त होगा। यदि आप आर्थिक बाधाओं से जूझ रहे हैं तो वे स्वतः दूर हो जाएंगी और नवीन लाभ प्रारंभ होंगे।

मंत्र – **ॐ ऐं सर्व कार्य वरद पारदेश्वरी महालक्ष्म्यै नमः॥**

इस मंत्र की शंख माला से 1 माला नित्य जाप करें।

(34). नौकरी में आने वाली कठिनाइयों से अगर आप त्रस्त हैं तो इस मंत्र का पारदेश्वरी लक्ष्मी के सामने नित्य सात माला जप करें।

मंत्र – **ॐ श्रीं विघ्न हराय पारदेश्वरी महालक्ष्म्यै नमः॥**

(35). यदि पदोन्नति में बाधा आ रही है और आप के अथक प्रयासों के बाद भी समस्या ज्यों कि त्यों बनी हुई है तो आप पारदेश्वरी लक्ष्मी स्थापित कर किसी भी माला से निम्नांकित मंत्र की 3 माला प्रतिदिन जाप करते हुए तीन दिन तक यह प्रयोग करें। मंत्र – **श्रीं ऐं फट् क्लीं।**

(36). यदि व्यापार में राज्य संबंधित कोई (वर्तमान युग में जैसे आयकर, बिक्रीकर या अन्य कोई कर) कठिनाई हो तो वे कठिनाइयाँ दूर होती हैं। इस प्रयोग हेतु साधक को पारदेश्वरी लक्ष्मी की प्रतिमा पर एक सौ आठ (108) लाल रंग के पुष्प चढ़ाते हुए इस मंत्र का जप करना चाहिए।

मंत्र – **ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं॥**

(37). जीवन के समस्त भोगों को भोगने की महत्वाकांक्षा हर व्यक्ति में होती है। अगर आप भी सब पाने के लिए लालायित हैं तो आइए आप भी यह साधना कीजिए एवं पाइए वो सब जो सपना था। क्योंकि सपने आते ही पूरे होने के लिए हैं। इस प्रयोग हेतु साधक को पारदेश्वरी लक्ष्मी की प्रतिमा पर 51 कमल के पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करना चाहिए।

मंत्र – **ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा॥**

इस प्रकार जप पूर्ण होने पर अगले रोज मात्र 3 माला जप इसी मंत्र की करें।

(38). समाज में सम्मान व यश की कामना हर इंसान में होती है। हर कोई यही चाहता है कि समाज उसे निम्न दृष्टि से न देखे। उसे सम्मान दे, उसका आदर करे। इस हेतु साधक को पारदलक्ष्मी पर अष्टगंध युक्त जल से निम्न मंत्र का जप करते हुए अभिषेक करें। तीन रात्रि तक 3 माला जप करें।

मंत्र – **ॐ लं लक्ष्म्यै नमः॥**

पारदेश्वरी लक्ष्मी की सभी साधनाओं में साधना करने के उपरांत या तो प्रतिमा व माला एवं साधना सामग्री को आदि को समुद्र में प्रवाहित करें। जहाँ समुद्र नहीं हो, वहाँ केले के वृक्ष की ओट में गाड़ दें। कुछ ही दिनों में आप सफलता अनुभव करेंगे।

(39). शास्त्रों में यहाँ तक उल्लेख मिलता है कि पारद लक्ष्मी के दर्शन मात्र से व्यक्ति धन्य हो जाता है। पारा जो चंचल है व लक्ष्मी भी चंचला नाम से विख्यात है। अगर दोनों चंचला को अपने वश में कर लिया जाय तो कौन–सा वो कार्य है जो असंभव है। लक्ष्मी के तमाम रूपों में सबसे विख्यात व पूज्य पारद लक्ष्मी साधना है। इसे पूजा स्थान में रख कर नित्य अष्टगंध युक्त जल से पंचोपचार पूजन करें। फिर उस जल को किसी पवित्र स्थान में इस प्रकार विसर्जित करें कि पाँव में न आये। इापकी गृह कलह व दोष की समस्त स्थितियाँ शांत हो जाएगी और सुख–शांति, सौभाग्य, ऐश्वर्य का स्थापत्य होगा।

(40). यह केवल रात्रि कालीन साधना है। ये धनत्रयोदशी से लेकर भाई दूज तक कभी भी ये साधना कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पग–पग पर रावण रूपी परिस्थितियाँ मुँह बाये खड़ी रहती हैं। बार–बार व्यक्ति समाज में आहत होता है, उस व्यक्ति को निश्चय ही यह साधना करनी चाहिए। साधक को साधना के वक्त अपनी उन बाधाओं को एक कागज पर स्पष्ट रूप से क्रमानुसार लिख लेना चाहिए, जिस पर वह विजय प्राप्त करना चाहता है।

अब साधक को पश्चिम दिशा में मुँह रख सके। इस तरह आसन पर बैठे। सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर चावल से षट्कोण बनाए। अब उस पर एक ताम्र पात्र स्थापित करें। उसमें पारद लक्ष्मी स्थापित करें। हल्दी, कुमकुम से पूजा करे। अब केसर, लाल रंग का पुष्प चढ़ायें, अष्टगंध मिश्रित पानी को दक्षिणावर्त शंख में (ना होने पर लघु दक्षिणावर्त शंख या मोती शंख भी प्रयोग में ला सकते हैं) पहले एक माला निम्न मंत्र का जाप करें। जाप स्फटिक माला से करें। एक माला जप समाप्त होने पर उस शंख के पानी से अभिषेक करें और अपनी पहली बाधा पर विजय हेतु विनती करें। इस प्रकार 1 माला जप करें। यदि बाधा (समस्यायें) एक–से अधिक हैं तो उतनी ही माला जपें। अब यंत्र को मस्तक से स्पर्श करायें और पूजा स्थान पर रख्श दें और अभिषेक किया हुआ जल सारे घर में छिड़कें। शेष पानी पवित्र पौधे में डाल दें। आप स्वयं देखेंगे कि जिस बाधा से आप चिंताग्रस्त थे, असाध्य मान रहे थे, वो सरलता से दूर हो गयी है।

मंत्र – **ॐ ऐं ह्रीं विजय वरदाय देवी नमः॥**

(41). लक्ष्मी प्रयोग के लिए इस साधना को श्रेष्ठ माना गया है। इस मंत्र का जप स्फटिक माला से करें और दीपावली के दिन कम से कम 11 माला जप करें।

मंत्र – **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥**

श्वेतार्क गणपति के प्रयोग –

(42). श्वेतार्क गणपति का अर्थ है आक से निर्मित गणपति। जहाँ पर अथक प्रयासों के बावजूद किसी कार्य में सफलता नहीं मिल पा रही है, दरिद्रता दामन नहीं छोड़ रही है तो उस व्यक्ति को ''श्वेतार्क गणपति'' दीपावली पर जरूर स्थापित करना चाहिए। इस प्रयोजन का ये सबसे सरलतम उपाय है। नित्य मूंगे की माला से निम्न मंत्र की एक माला जप करें।

मंत्र - **ॐ गं गणपतये नमः॥**

श्वेतार्क गणपति को सदैव अपने घर में रखें। यदि संभव हो तो नित्य दूर्वा अर्पित करें।

(43). जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति, सौभाग्य, श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त करने के लिए श्वेतार्क गणपति अत्यंत अद्वितीय है। श्वेतार्क गणपति के संबंध में यहाँ तक कहा गया है धन–धान्य, सुख–सौभाग्य, ऐश्वर्य और प्रसन्नता प्राप्ति हेतु श्वेतार्क गणपति से श्रेष्ठ और कोई विग्रह नहीं। इस विग्रह का घर, प्रतिष्ठान में स्थापित होना ही पर्याप्त है। इसे पूजा स्थान में स्थापित करें।

मंत्र – **ॐ गणायै पूर्णत्व सिद्धिं देहि देहि नमः॥**

इस मंत्र की नित्य एक माला जपें तो सोने में सुहागा साबित होगा।

(44). यदि आप बहुत महत्वाकांक्षी हैं, जीवन में हर मनोकामना पूर्ण हो, ऐसी प्रगाढ़ इच्छा है तो आपको अवश्य ही ''महालक्ष्मी यंत्र'' को स्थापित करना चाहिए। धनत्रयोदीशी की रात्रि को इस यंत्र को स्थापित करें एवं भाई दूज तक पाँच दिन तक नित्य इसकी 5 माला जपें। यदि महानिशा में अधिक जप कर सकें तो श्रेष्ठ है। मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीं सर्वकार्य सिद्धि देहि मे नमः॥**

स्फटिक माला के प्रयोग :–

(45). स्फटिक माला से लक्ष्मी का जप किया जाता है, इसे गले में भी धारण किया जाता है। यदि आप स्फटिक माला को पूजा स्थान में रखें और नित्य इससे **''ऐं ह्रों श्रीं क्लीं''** मंत्र का जप करें, तो माला चैतन्य हो जाएगी और लक्ष्मी का वास हो जाएगा और उस घर में लक्ष्मी निरंतर बनी रहेगी।

(46). यदि आप पदोन्नति या इंटरव्यू में सफलता की आशा रखते हैं तो आपको इस स्फटिक माला को अवश्य धारण करना चहिए। ये माला धारण करने वाले व्यक्ति से सामने वाला अधिकारी प्रभावित हो जाता है और उसका काम निश्चित ही पूरा होता है। माला को पहले 108 माला फेरकर चैतन्य करना चाहिए।

मंत्र – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः॥**

(47). उपरोक्त मंत्र द्वारा चैतन्य करके स्फटिक माला अगर व्यापारिक प्रतिष्ठान में लक्ष्मी की फोटो पर लटकाकर रखी जाय तो व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ता नजर आएगा।

गोमती चक्र के प्रयोग

(48). यदि आप लक्ष्मी की कामना रखते हैं, लेकिन यंत्र के पूजा–पाठ की पवित्रता, यंत्रों का सार–संभाल करने में असमर्थ हैं तो आपको समृद्धि हेतु ये टोटके आजमाने चाहिए, जो देखने में छोटा जरूर है, लेकिन प्रभावी पूरा है।

एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चावल से षट्कोण बनायें और 11 गोमती चक्र को उस के बीच में स्थापित करें। एक तरफ घी का का व दूसरी तरफ तेल का दीपक जलायें। अब कुबेरमाला से 'श्रीं' मंत्र का 21 माला जप करें। अब सुबह में इस सारी सामग्री को किसी पीपल के पेड़ में विसर्जित कर दें और पीछे मुड़े बिना घर आकर स्नान कर लें। जाप जहाँ तक हो सके, कुबेर माला से करें।

(49). व्यापार वृद्धि हेतु 11 गोमती चक्र व एक लघु नारियल किसी लाल वस्त्र में लपेट कर दीपावली के दिन दुकान के प्रवेशद्वार पर बांधें, व्यापार में नित्य–प्रतिदिन वृद्धि अनुभव करेंगे।

(50). अगर आप को ये महसूस हो रहा है कि व्यापार पर किसी की नजर लग गयी व कल तक जहाँ अच्छी–खासी बिक्री हो रही थी, आजकल एकदम कम हो गयी है, तो आप 'ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं' मंत्र का जप करते हुए 7 गोमती चक्र व एक मोती शंख व एक लघु नारियल पर एक–एक चावल डालते हुए उपरोक्त मंत्र को 108 बार बोलें। फिर इन सब चीजों को किसी पीले वस्त्र में बांधकर लाल धागे से लपेटकर दुकान में टांग दें। व्यापार पुनः पहले की भांति गति पकड़ेगा।

(51). कई बार ऐसा होता है कि किसी को पैसा देने के बाद तिजोरी से पैसा निकलता जाता है। धन टिकता नहीं तो आप धनत्रयोदशी के दिन 3 गोमती चक्र, एक मोती शंख एवं 5 कौड़ियाँ ''माँ वैभवलक्ष्मी'' का स्मरण करते हुए तिजोरी में रख दें। अगर प्रत्याक्षित लाभ अनुभव करें तो हर महीने बराबर उसी तारीख को पोटली बदलते रहें व पुरानी पोटली को किसी मंदिर में चढ़ा दें।

(52). आपने देखा होगा कि हम कोई व्यापार जितने जोश से शुरू करते हैं, कुछ ही समय में वो जोश धीमा होने लगता है। इसका अर्थ यह हुआ कि पहले वाला उत्साह खत्म हो गया। अगर आप ऐसा महसूस कर रहें हैं तो आपको 1 मोती शंख, 3 गोमती चक्र एवं 11 कौड़ियाँ एवं प्रचलित मुद्रा अर्थात् सिक्के लेकर उसे पीले वस्त्र में लपेटकर व्यापारिक प्रतिष्ठान की छत पर किसी डंडे की सहायता से टांग दें। कुछ ही दिनों में आप खुद नया उत्साह महसूस करेंगे।

दक्षिणावर्त्त शंख का प्रयोग

(53). यदि आप व्यापार में नित्य नई प्रगति के इच्छुक हैं तो दीपावली की रात्रि में आप लक्ष्मी पूजन के समय अथवा महानिशाकाल में दक्षिणावर्त्त शंख में अभिषेक करते हुए निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र – **ॐ ऐं श्रीं सर्वकार्य सिद्धि कुरु कुरु नमः॥**

फिर दक्षिणावर्त शंख को पूजा स्थान में अष्टगंध मिश्रित पानी डालकर चावल भरी कटोरी पर रखें।

(54). दक्षिणावर्ती शंख का आपके पूजा स्थान में स्थापित होना ही अपने–आप में विशेष महत्व रखता है। नित्य जिस प्रकार सभी देवी–देवता की पूजा करते हैं, उसी प्रकार से इसकी पूजा करें व नित्य पानी बदलें एवं एक चांदी का सिक्का हर वक्त इसके भीतर रखें। धीरे–धीरे आप खुद प्रगति महसूस करेंगे।

(55). यदि आप ऋण (कर्ज) के बोझ से दबे जा रहे हैं, बहुत कुछ करते हुए भी आप ऋण मुक्त नहीं हो पा रहे हैं, कुछ–न–कुछ समस्या ऐसी आ जाती है कि कर्ज लेना ही पड़ता है, फिर एक और ऋण बंधन में

बंध जाते हैं तो आपको घर में दीपावली की रात्रि में दक्षिण दिशा में मुँह करके बैठें। सामने बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर चावल की ढेरी करें। उस पर थाली रखकर उसमें केसर के घोल से "**श्रीं** " लिखें। अब उस पर "श्री यंत्र" या महालक्ष्मी यंत्र या पारद लक्ष्मी जो भी आपके पास उपलब्ध हो, लक्ष्मी स्वरूप यंत्र या प्रतिमा हो उसे स्थापित करें। अब अपने पास दूध, दही, घी, शहद, शक्कर इत्यादि मिलाकार पंचामृत बना लें। उसे दक्षिणावर्ती शंख में भरकर उस यंत्र या प्रतिमा पर डालते जाएं एवं निम्न मंत्र का निरंतर जप करते रहें। अब केशर, इत्र मिश्रित पानी से मूर्ति या यंत्र को स्नान करायें और चावल की ढेरी पर रखें।

पंचामृत घर के सभी सदस्य लें और बाकी गाय इत्यादि को पीलायें या किसी पेड़ में विसर्जित कर दें और शंख को पूजा स्थान में रख दें। पूजा के तीसरे दिन यंत्र या मूर्ति को उस कपड़े में लपेटकर किसी केले के पेड़ की ओट में दबा दें या दक्षिण दिशा में कहीं भी गाड़ दें। आप जरूर ऋण मुक्त हो जाएंगे।

मंत्र – **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं।**

(56). जहाँ आप को लगे कि पहले तो घर में सुख–शांति सब थी और अचानक गृहकलह बढ़ गया है। जिसका कि मुख्य कारण पैसा है तो दक्षिणावर्त शंख के भीतर पाँच कौड़ियाँ डालकर एवं चावलों से भरकर लाल वस्त्र में बांधकर चावल से भरी कटोरी पर घर में स्थापित कर दिया जाय तो जब तक वह शंख घर में स्थापित रहता है, आर्थिक न्यूनता एवं गृहकलह रह ही नहीं सकती।

(57). जो साधक मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दक्षिणावर्त शंख अपने पूजा स्थान में रखे और नित्य एक माला **"ॐ श्रीं श्रियै नमः"** मंत्र की जपे तो वो जो भी इच्छा करता है, वह इच्छा अवश्य ही पूरी होगी।

(58). लक्ष्मी के स्थायित्व की आशा किसे नहीं होती। अगर आप के हृदय में भी यही भाव है तो आप दीपावली के दिन बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछायें। उस पर केसर के घोल से अष्टदल कमल बनायें और उस पर दक्षिणावर्ती शंख को रखें अब उसे चावल से पूरा भर दें और शंख पर स्वास्तिक का चिन्ह बनायें। और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि हे माँ लक्ष्मी! आप मेरे घर में स्थायी रूप से स्थापित हों। आप विश्वास मान कर चलिए कि उस घर में जीवन पर्यन्त लक्ष्मी बनी रहती है और आर्थिक उन्नति होती रहती है। दक्षिणावर्त शंख का एक नियम है कि इसे कभी खाली नहीं रखें। कुछ नहीं तो इसमें चावल ही भरकर रखें अथवा एक–दो सिक्के ही डालकर रखें। इस तरह पूजा कर स्फटिक माला से निम्नांकित मंत्र का जाप 2 माला करें।

मंत्र – **ॐ श्रीं कमल वासिन्यै ऋद्धि–सिद्धि सहिताय नमः।।**

(59). आप कई महीनों से कोई नये उद्यम (कार्य या व्यवसाय) करने की ठाने हुए हैं। लेकिन पता नहीं परिस्थितियाँ साथ नहीं देती हैं और योजनायें धरी–की–धरी रह जाती हैं, शुरू कुछ नहीं होता। तो आपको 2 गोमती चक्र, 1 मोती शंख, 5 लग्न मंडप तांत्रोक्त सुपारियाँ व 7 कौड़ियाँ किसी काले वस्त्र में लपेटकर अपने ऊपर से वार कर चौराहे पर रख आयें। वारने के समय से लेकर चौराहे पर रखने जाते समय तक **"ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः क्लीं ॐ"** मंत्र का जप निरंतर करते रहना चाहिए। ये प्रयोग दीपावली की सायं आरती के समय के बाद कभी भी कर सकते हैं। एक माह के भीतर–भीतर आपको समस्याओं का अंबार एवं व्यवधान हटते नजर आएंगे।

हत्थाजोड़ी, सियारसिंगी व बिल्ली के नाल के प्रयोग :–

(60). बहुत–से लोग ऐसे होते हैं, जो पूजा–पाठ के लिए समय नहीं दे पाते। लेकिन लक्ष्मी की आशा भरपूर रखते हैं। अगर व्यापार वृद्धि कहीं रूक गयी है तो आपको भी एक सियारसिंगी, एक हत्थाजोड़ी व एक बिल्ली की नाल को चांदी की डिब्बी में सिंदूर भरकर तीनों वस्तुओं को उसमें रख दें एवं अनुभव करें इसके प्रत्यक्ष चमत्कार।

(61). यदि आपको लगे कि किसी ने आपके व्यापार को बांध दिया है, व्यापार दिन–ब–दिन घटता जा रहा है तो आपको दीपावली की रात्रि में पूरी रात के लिए एक तेल का दीपक जलायें और उसमें हत्थाजोड़ी,

बिल्ली की नाल, सियारसिंगी तीनों एक–एक लेकर अपने प्रतिष्ठान पर से वार कर दीपक में छोड़ दें और थोड़ा सिंदूर डाल दें। जब सवेरे दीपक बुझ जाये ता इस दीपक को तीराहे पर रख आयें। आप जरूर बंधन मुक्त हो जायेंगे।

(62). आप समृद्धि, संपन्नता, ऐश्वर्य, प्रसन्नता इन सब के इच्छुक हैं तो आप हत्थाजोड़ी, बिल्ली की नाल व सियारसिंगी इन तीनों को सिंदूर की डिब्बी में भरकर अपने तिजोरी में रखें और इस डिब्बी पर कोई वजनी वस्तु रखें। हर दीपावली से होली इसे बदलें। उठायी हुई डिब्बी की सामग्री किसी चौराहे पर कागज में लपेटकर छोड़ आयें।

(63). आप सुखी हैं, हर तरह के शौक–मौज में मस्त हैं, इसे देखकर आपके पड़ोसी आप से ईर्ष्या भाव रखते हैं, आपके बारे में तरह–तरह की बातें करते हैं तो आप तीन सियारसिंगी लेकर सिंदूर में डुबोकर अपने घर पर वारकर किसी हनुमान मंदिर में हनुमान जी के चरणों में रख दें। इस प्रयोग द्वारा कुछ ही दिनों में उनको उनके किए की सजा मिल जाएगी।

(64). **कुबेर यंत्र के प्रयोग** – दीपावली की रात्रि में कुबेर यंत्र को स्थापित करें एवं 7 माला इस मंत्र का जाप करें– **''ॐ ह्रीं धान धाान्य समृद्धि देहि देहि कुबेराय नमः''।** इस प्रकार जब जाप समाप्त हो जाए तो कुबेर यंत्र को सवेरे पूजा स्थान में रखें और 2 दिन तक रोज सुबह 21 बार इस मंत्र को दोहरायें, तो उसके घर में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होने लगती है। इसलिए कहा भी गया है कि जिसके घर में कुबेर यंत्र स्थापित होता है, वे अत्यंत सौभाग्यशाली होते हैं, क्योंकि यह अपने आप में पूर्ण लक्ष्मी का चैतन्य स्वरूप है। जिस घर में यह स्थापित होता है, वहाँ जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता रह ही नहीं सकती और नित्य उन्नति का स्वाद लेते हैं।

(65). **लक्ष्मी माला के प्रयोग** – लक्ष्मी माला वो है, जिससे लक्ष्मी की साधना में साधक माला जाप करता है, उसी लक्ष्मी माला को तो गले में धारण नहीं किया जाता है। हाँ लेकिन विशेष रूप से अभिमंत्रित लक्ष्मी माला को गले में धारण करना उपयुक्त है। इस माला को धारण करने वाला व्यक्ति निरंतर उन्नति करता है। इसे धारण कर इंटरव्यू में जाने वाला व्यक्ति अवश्य सफल होता है, उसका हौसला बढ़ जाता है और वाणी सफल हो जाती है। और अगर आप गले में धारण करने में संकोच करते हैं तो इसे अपने अध्ययन कक्ष में रखें और यदि तिजोरी, आलमारी, कैश बॉक्स इत्यादि में रखें तो आश्चर्यजनक अनुकूल परिणाम प्राप्त कर सकेंगे।

लक्ष्मी–गणेश महायंत्र के प्रयोग –

(66). यह साधना दीपावली की संध्या समय (वृष लग्न) में करने की है। साधक पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके ऊनी आसन पर बैठे। सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चावल की ढेरी करें। उस पर एक तांबे का कलश रखें। उसमें 11 कौड़ियाँ डाल दें। अब उस पर तांबे की प्लेट रख कर उसमें ''लक्ष्मी गणेश महायंत्र'' को स्थापित करें। अब गुलाल–अबीर से पूजा करें व कमल के अथवा लाल पुष्प चढ़ायें और **''ॐ महालक्ष्मी श्रीं श्रीं श्रीं दारिद्रय हराय देवी भूतेश्''** मंत्र का 7 माला जाप करें। जाप कमलगट्टे की माला से करें। इस जप की पूर्णता होने पर महालक्ष्मी की साधक पर निश्चित रूप से कृपा प्राप्त होगी। इसमें संदेह रखने वाला जीवन भर दरिद्री ही रहता है।

(67). महालक्ष्मी की कृपा प्राप्ति हेतु साधक को पूर्व में मुँह करके आसन पर बैठे। सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाये एवं उस पर जल से भरा एक तांबे का कलश रखें। उस पर कमलगट्टे की माला बांध दें। अब इस कलश में 11 तांबे के श्रीयंत्र के सिक्के एवं 11 लक्ष्मीकारक कौड़ियाँ डाल दें। कलश पर एक कटोरी रख दें। इस कटोरी में चावल भर कर एक पानी वाला नारियल ऊपर स्थापित करें। सामने लक्ष्मी का चित्र रखें। अब चमेली के तेल का दीपक प्रज्वलित करें। (यदि चमेली का तेल उपलब्ध नहीं हो तो शुद्ध घी का दीपक उपयोग में लें)। अब **''ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्नयै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।।''** मंत्र की 11 माला जपें। यदि परिवार वाले भी साथ देना चाहे तो शुभ है। (11 माला में यदि परिवार वाले भी जपें तो सभी की संख्या गिनें। जैसे आपने तीन माला, आपके पुत्र ने पाँच माला,

आपकी पत्नी ने 2 माला जपी, आपकी पुत्री ने 1 माला, इस प्रकार 11 माला हुई)। फिर माला समेत कलश अपने घर के स्टोर में रख दें। महालक्ष्मी आप पर प्रसन्न होकर सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य प्रदान करेंगी।

(68). आजकल बेरोजगारी की समस्या सबसे बड़ी समस्या है। हमारे सामने चारों तरफ कभी भाई, पति, पुत्र कोई न कोई इस समस्या से ग्रस्त है। माँ–बाप कितने जतन से पेट काट–काट कर पैसा इकट्ठा कर बच्चों को पढ़ाते हैं। अच्छी से अच्छी स्कूल, कॉलेज, अच्छे से अच्छे कोर्स, वर्षों के सघन अध्ययन के बावजूद समस्त प्रयासों के बाद भी इंटरव्यू में मिली असफलता के कारण व्यक्ति कुंठाग्रसस्त हो जाता है। भगवान गणपति विघ्न विनाशक हैं। ऐसे सभी विघ्नों का नाश भगवान गणपति की साधना द्वारा संभव हो जाता है और मनोवांछित व्यवसाय, नौकरी की प्राप्ति होती है। साधक को पीला पीताम्बर पहनकर पश्चिम दिशा में मुँह करके पीले आसन पर बैठना चाहिए। फिर सामने बाजोट पर पीली दाल की ढेरी करें और उस पर तांबे का कलश जल भर कर रखें। उस पर एक कटोरी रखें। उसमें एक हकीक चेटक, एक पारद मोती, सात कौड़ियाँ व एक मोती शंख और एक लघु नारियल रखें। अब हकीक माला से **''ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतयै वर वरदये नमः''** मंत्र का जप 3 माला करें। अब समस्त कलश का पानी तुलसी के पौधे में डाल दें व बाकी सामग्री को पोटली में बांधकर किसी नदी, तालाब में विसर्जित कर दें अथवा पीपल के पेड़ पर बांध दें। आप शीघ्र ही समस्या से मुक्त हो जाएंगे।

(69). अक्षय लक्ष्मी की कामना हर व्यक्ति में होती है। इस साधना को संपन्न करने पर दरिद्री व्यक्ति के घर में भी लक्ष्मी का आगमन होता है और वह सुख अनुभव करता है। इस साधना के लिए साधक को दिन मं किसी भी समय (जहाँ तक हो सके प्रातः में) स्नानादि से निवृत्त होकर उत्तर दिशा में मुँह करके बैठें। अब बाजोट पर मसूर की दाल की ढेरी करें। उस पर 1 मोती शंख, 5 कौड़ियाँ व 1 हकीक चेटक स्थापित करें। उनकी कुंकुम, हल्दी व सिंदूर से पूजा करें। कुछ देर तक कौड़ियों पर त्राटक करें। त्राटक में ध्यान लगाकर लक्ष्मी को देखने का प्रयत्न करें। थोड़ी देर के प्रयास के पश्चात् आपक लक्ष्मी को कौड़ियों में देख पाएंगे। अब कौड़ियों और मोती शंख को जलाकर उनकी राख बना लें। हकीक चेटक को काले धागे में बांध कर अपनी भुजा अथवा गले में पहन लें। कौड़ियों और मोती शंख की राख को अपने पैरों के तलवों पर लगा लें।

(70). **श्री यंत्र मुद्रिका के प्रयोग** :– श्री यंत्र की मुद्रिका अधिकतर व्यापारियों के हाथों में देखी ही होगी। प्रायः व्यक्ति स्वर्ण श्रीयंत्र युक्त चांदी की मुद्रिका धारण किए रहते हैं। यह एक प्रकार से देवी लक्ष्मी को सदैव साथ रखने के समान है।

दीपावली की रात्रि में जब लक्ष्मी पूजन करें, उस समय शुद्ध मन से लक्ष्मी की मूर्ति के सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाये और उस पर थाली रखकर उसमें अष्टदल कमल बनाए। अष्टदल पर श्री यंत्र मुद्रिका स्थापित करें। अब '' ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रियै नमः'' मंत्र का जप करते हुए 51 बार उस पर इत्र मिश्रित जल से अभिषेक करें, धूप–दीप करें व प्रसाद चढ़ायें। अब आँख मूंद कर 2 माला इस मंत्र का जप करें। जप कमलगट्टे की माला से ही करें। अब पानी को किसी भी पेड़–पौधे में डाल दें। प्रसाद बांट कर अंगूठी को दायें हाथ में धारण करें। आपको आपकी श्रद्धा का यथेष्ट लाभ मिलेगा।

(71). **पारद मुद्रिका के प्रयोग** :– पारद मुद्रिका भी इसी प्रकार ऐश्वर्य, सुख–समृद्धि प्रदान करने में सक्षम है। इससे निर्मित पूज्य प्रतिमायें स्थापित कर व्यक्ति मालामाल हो जाता है। इस मुद्रिका को विशेष तौर से इसलिए निर्मित किया जाता है। आप इसे हर वक्त धारण किए हुए रह सकते हैं। इस मुद्रिका को भी धनत्रयोदशी से लेकर दीपावली तक कभी भी सुबह या शाम के समय बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर एक थाली में चंदन, केशर मिश्रित घोल से 'श्रीं' लिखें। अब उस पर इस विशेष मुद्रिका को स्थापित करें और उस मुद्रिका पर **''ॐ ह्रीं नमः''** मंत्र का जप करते हुए 101 बार शक्कर से अभिषेक करें, यानि सिर्फ शक्कर के दाने डालें। अब धूप–दीप करें, पुष्प चढ़ायें। जहाँ तक संभव हो लाल रंग का फूल चढ़ायें और प्रसाद चढ़ायें। अब इसी मंत्र का जप 27 माला स्फटिक की माला से करें और शक्कर व

प्रसाद स्वयं लें व परिवार में बांटें। मुद्रिका धारण कर लें। यह जप दारिद्रय नाशक है और आप इसमें शीघ्र सफलता अनुभव करेंगे।

(72). लक्ष्मी साधना हेतु आगे भी कई मंत्र दिए जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त भी कई मंत्र हैं, जिनका जप साधकों को अर्थ संकट से मुक्त कर देता है। आप कभी भी इन मंत्रों को सिद्ध कर सकते हैं व दैनिक जप से नित्य प्रगति के मार्ग पर बढ़ सकते हैं। इन मंत्रों को सिद्ध करने का समय विशेष तौर से तीन रात्रियाँ, होली की रात्रि, दीपावली की रात्रि व शिवरात्रि है एवं ग्रहण काल है। इस समय किए हुए समस्त प्रयास सफल होते हैं। ऐसा शास्त्रों में लिखा है। इसी श्रृंखला में भाग्योदय कारक अंगूठी भी ऐसी ही विशेष मुद्रिका है, जिसे धारण कर व्यक्ति लक्ष्मी को प्राप्त करने का प्रयास करता ह। इसे बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर थाली में स्वास्तिक बनाकर उस पर स्थापित करें। अब चावल का एक–एक दाना डालते हुए **''ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा''** मंत्र का 21 बार उच्चारण करें। अब किसी भी माला से अथवा अंगुलियों द्वार गिन कर 108 बार जप करें। धूप–दीप करके प्रसाद चढ़ायें एवं प्रसाद सबमें बांट दें। चावल पक्षियों को डाल दें और अंगूठी धारण कर लें। यह अंगूठी निश्चित रूप से आपके भाग्योदय में सहायक होगी।

(73). आप अगर साढ़े साती या ढैया के प्रकोप से कष्ट में हैं, नित्य नई समस्या से जूझ रहे हैं, जो किसी गाड़ी पटरी पर चल रही थी, अचानक से बिना किसी पूर्वाभास के आप समस्या से ग्रस्त हो गए हैं, तो आप किसी विद्वान के कथन अनुसार शनि की साढ़े साती या ढैया की वजह से मुसीबत में फंस गए हैं तो आपको शनि देव को प्रसन्न करने के लिए शनि मुद्रिका धारण करनी चाहिए। इस कष्ट के निवारणार्थ आप दीपावली के दिन किसी तेल के दीपक में शनि मुद्रिका डाल दें। ऊपर से थोड़ा सा सिंदूर भी डाल दें। यह दीपक दीपावली की पूरी रात जलती है, इस प्रकार प्रकार की व्यवस्था करें। अंगूठी सारी रात उसमें ही रहने दें। जब प्रातः उस दीपक में से अंगूठी को निकालें, तब 27 बार **''ॐ शं शं हूं शनये प्रसन्नं भव''** का उच्चारण करें। साफ पानी से अंगूठी को धोकर पहन लें। उसी दिन सवा किलो काले उड़द खरीद कर गरीबों को दान करें।

(74). **सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग** :– यह दरिद्रता नाश के लिए और आर्थिक उन्नति के लिए अद्वितीय प्रयोग है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि कोई साधक इस प्रयोग को संपन्न करें और लक्ष्मी प्रसन्न न हो। इस प्रयोग को संपन्न करने से लक्ष्मी सदा–सदा के लिए सिद्ध हो जाती है। इस प्रयोग हेतु पारद लक्ष्मी को बाजोट/चौकी पर स्थापित करें और दक्षिण दिशा में मुख रख सकें, इस प्रकार बैठें। सात (7) लक्ष्मी कारक कौड़ियाँ को लक्ष्मी के आगे इस मंत्र का जप करते हुए कौड़ियों को लक्ष्मी के ऊपर से वारते (घुमाते) हुए लक्ष्मी के चरणों में रखें। फिर इन सब को 27 दिनों तक पूजा स्थान में रखें और फिर उसे नदी या समु फिर इन सब को 27 दिनों तक पूजा स्थान में रखें और फिर उसे नदी या समुद्र में प्रवाहित कर दें।

मंत्र – **ॐ श्रीं ह्रों महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ स्थिर फट्।।**

(75). **धनदा यंत्र के प्रयोग** :– धनदा यंत्र धनदा देवी आदि शक्ति का रूप है। प्राचीन तंत्र ग्रंथों में धनदादेवी के साधन की विधि बहुत विस्तार से वर्णन की गयी है। यदि पूर्ण विधि–विधान से धनदा यंत्र को चैतन्य किया जाय तो प्रभावी होने में कोई शंका नहीं रहती।

मंत्र – **धं ह्रों श्रीं रतिप्रिये स्वाहा।।**

यह नौ अक्षरों का मंत्र शीघ्र सिद्धि देने वाला है।

(76). दुकान में धनदा यंत्र को दीपावली के दिन स्थापित कर उसी समय एक माला उपरोक्त मंत्र की जप कर लें तो अगली दीपावली के दिन कोई कष्ट नहीं आता।

(77). धनदा यंत्र को दुकान की चौखट पर लगा दें तो दुकान ग्राहकों को खींचती है, अर्थात् वशीकरण करती है।

(78). यदि धनदा यंत्र को दुकान के भीतर कहीं लगा दिया जाय तो दुकान पर कभी आर्थिक संकट नहीं आता।

(79). यदि धनदा यंत्र को गल्ले में रख दिया जाय तो कभी कमी नहीं आती।

(80). यदि धनदा यंत्र को व्यक्ति एक नारियल के साथ लाल कपड़े में बांधकर बहते पानी में बहा दें तो उसकी दरिद्रता भी बह जाती है।

(81). यदि धनदा यंत्र को तीन हकीक पत्थर के साथ कद्दु में रखकर दुकान के अंदर–बाहर से उतारकर (घुमा कर) दुकान के बाहर दीपावली की प्रातः फोड़ दिया जाय, तो दुकान का वास्तुदोष समाप्त हो जाता है।

(82). यदि धनदा यंत्र को पारद प्रतिमा (पारद शिवलिंग, पारद गणेश, पारद लक्ष्मी, पारद दुर्गा आदि) के साथ स्थापित किया जाय तो धनदा यंत्र कुबेरवत फल देने लगता है।

(83). यदि विष्णु यंत्र को स्थापित कर लक्ष्मी मंत्र का जप किया जाय, तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है एवं धन संबंधी रूकावटें दूर होती हैं।

(84). बिल्व (बेल) के पेड़ के नीचे धनत्रयोदशी से दीपावली तक तीन दिन यदि कोई व्यक्ति 11 माला प्रतिदिन संपुटित श्रीसूक्त का जप कर ले तो वह स्वयं कुबेर तुल्य सम्मानित हो जाता है।

(85). दीपावली के दिन स्थापित किया हुआ पारद शिवलिंग धन–समृद्धि कारक होता है। यों कोई भी पारद प्रतिमा तांत्रिक गुण लिए हुए होती है, और शिव तो हैं ही समस्त तांत्रिक शक्तियों के स्वामी। कहा भी गया है जिस घर में पारद शिवलिंग स्थापित हो वहाँ दरिद्रता का नामो निशान नहीं रहता।

(86). यदि एकाक्षी नारियल को दीपावली की रात्रि में लक्ष्मी पूजन करने के पश्चात् घर के छोटे–बड़े सभी सदस्यों पर से घुमा कर घर के बाहर फोड़ दिया जाय तो घर के सभी सदस्यों पर आई हुई बला टल जाती है। किसी पर दुर्भाग्य की काली छाया हो तो उससे निवृत्ति हो जाती है।

(87). यदि दीपावली की रात्रि में एक कद्दु को आधा काट कर उसमें 11 बेसन के पकौड़े, 11 लग्न मंडप सुपारियाँ, 11 कौड़ियाँ एवं एक नींबू के 4 भाग कर इस कद्दु में डाल दें। इस कद्दु में पाँच प्रकार के साबुत अनाज जो आधे पकाये हुए हों डालें। उस पर सिंदूर आदि डाल दें। घर के सभी सदस्य इस कद्दु में कुछ–न–कुछ दक्षिणा डालें एवं अपना हाथ लगा दें। अब घर का कोई सदस्य इसे किसी लाल कपड़े में बांध कर तीन रास्ते (तिराहे) पर छोड़ आयें।

(88). यदि 30 दिनों तक किसी को एक हकीक पत्थर के साथ एक सिक्का दान किया जाय तो 31 वें दिन वह व्यक्ति आर्थिक संकट में नहीं रह सकता।

(89). अयोध्या में दीपावली के दिन ही श्रीराम का प्रवेश हुआ था। अतः इसी दिन यदि रामरक्षा यंत्र घर में स्थापित किया जाय तो वहाँ आपदाओं से सदा रक्षा होती है। यों भी रामायण के कई मंत्रों से धन–संपन्नता प्राप्त की जा सकती है।

(90). सदैव गले में जो व्यक्ति स्फटिक माला धारण किए रहता है, उसे आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ता।

(91). जिस व्यक्ति के गले में पारद मोतियों की माला हो, उसे किसी भी प्रकार का संकट छू भी नहीं सकता। वह स्वयं जीवन में कुबेर के समान रहता है।

(92). जिस व्यावसायिक प्रतिष्ठान में जगद्गुरु शंकराचार्य जी द्वारा निर्देशित मेरुपृष्ठ श्रीयंत्र स्थापित हो, वह प्रतिष्ठान जगत प्रसिद्ध होता है।

(93). जो महिलायें दीपावली के दिन तुलसी की पूजा करती हैं, उनके यहाँ कभी निर्धनता नहीं आती है।

(94). जिन व्यापारियों की बही में अष्टगंध की स्याही से ''शुभ–लाभ'' या ''श्री'' लिखा हो, वे सदैव व्यापार में सफल रहते हैं।

(95). दीपावली के दिन सायं काल में लक्ष्मी बीसा यंत्र की स्थापना कर मात्र 11 दिन में प्रत्यक्ष चमत्कार देखा जा सकता है।

–: सम्पूर्णम् भौतिक समृद्धि प्रयोगम् :–

प्रस्तुति :– श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com